31

जन पर्यटन की समस्याएँ

31.1 भूमिका

पिछले तीन पाठों में हम यात्रा-पर्यटन के क्रमिक विकास -प्राचीन कालीन यात्राओं से लेकर आधुनिक पर्यटन उद्योग तक के विषय में जान चुके हैं। आतिथेय देश में धन के अर्जक तथा रोजगार के सर्जक के रूप में हम इस के महत्त्व से भलीभाँतिं परिचित हो चुके हैं। आगन्तुक पर्यटकों के लिए यह मनोरंजन का साधन और व्यापार के अवसर देने वाला है। इस पाठ में आप वर्ष प्रतिवर्ष हमारे देश में आने वाले पर्यटकों की भारी संख्या से उत्पन्न समस्याओं और उनके समाधान के विषय में पढ़ेंगे।

31.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- पर्यटन के नाकारात्मक प्रभावों का अनुमान लगा सकेंगे,
- भारी संख्या में आने वाले पर्यटकों के कारण उत्पन्न आपदाओं के संकेतो को पहचान सकेंगे।
- किसी क्षेत्र में पर्यटन के स्वस्थ विकास के लिए शुरू की गई कार्य योजनाओं के महत्व को समझा सकेंगे,
- पर्यटन के संवर्धन के लिए उपयुक्त योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।

31.3 जन पर्यटन की समस्याएं

हम जन-पर्यटन की समस्याओं पर तीन शीर्षकों के अन्तर्गत विचार करेंगे। (क) पर्यावरण पर प्रभाव, (ख) स्थानीय अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव (ग) स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव

(क) पर्यावरण पर प्रभाव

पर्यटकों के लिए पर्यावरण का आकर्षण तभी तक है जब तक वह एक सीमा से अधिक क्षतिग्रस्त नहीं हो जाता। जन पर्यटन के हानिकारक प्रभावों से इसके सभी घटकों को सुरक्षित रखने की सावधानियाँ बरतने की बहुत आवश्यकता है। मनुष्यों या घोड़ों के निरंतर घूमने-फिरने से मृदा के कण अपनी जगह से हटजांते या गठित होजाते हैं। मार्गों पर भारी वाहनों के यातायात से पक्की सड़कों पर और कच्ची सड़कों पर गहरी दरार और लीक पड़ जाती है। परिणामस्वरूप शुष्क क्षेत्रों में या शुष्क ऋतु में वाहनों के गुजरने के बाद धूल और कंकड़ों के और ठोस मिट्टी पर गुबार बन जाते हैं। ऐसे धरातल पर जल का प्रवाह या विगलित हिम का प्रवाह अधिक बढ़ जाता है। वनवीथियों और पर्वतीय ढलानों पर से मृदा को बहुमूल्य आवरण के हटने के साथ ही पर्यटकों के लिए इसका पहले वाला आकर्षण, विकर्षण में परिवर्तित हो जाता है। पर्यटन क्षेत्र में जल के प्रवाह का अधिक्य सड़कों और भवनों की नीवों को नुकसान पहुँचा सकता है। पर्यटन स्थलों में सर्वत्र तथा ऊँचाई पर स्थित कैंप स्थलों पर अपघटित न होने वाले पदार्थ जैसे प्लास्टिक की थैलियाँ, टिन के डिब्बे, रासायनिक प्रदूषक आदि बिखरे हुए होते हैं। सामान्य पर्यटकों और ट्रैकरों को यह समझाना आवश्यक है कि वे अपने मार्गों और गन्तव्यस्थलों को साफ सुथरा रखें। किसी क्षेत्र में उसकी क्षमता से अधिक पर्यटक आएँगे तो वहाँ के मैदानों की घांस उनके निरंतर चलने-फिरने से कुचली जाकर सुख जाएगी। पौधों के मूल आवरण के स्थान पर अवांछित पौधों की प्रजातियाँ उग आती है। वन्य जीव तथा पक्षी मनुष्यों की भीड़भाड़ से डरकर अन्यत्र भाग जाते हैं। यदि उन्हें कहीं और जाने की जगह और मार्ग नहीं मिलते तो, वहीं दम तोड़ देते है। आवासों के उजड़ने से, घटिया जल के कारण, न भूमियों से अक्सर कीचड़ निकाले जाने के कारण, भूमियों में गाद मिट्टी के भरने तथा अत्यधिक शोर-गुल से वन्य जीव परेशान हो जाते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था 'अपनी सभ्यता और संस्कृति के बावजूद मनुष्य अभी तक न केवल जंगली बना हुआ है अपितु तथा-कथित किसी भी जंगली जानवर से अधिक खतरनाक है।'

प्राचीन काल के राजा महाराजा और मुगल बादशाह अपनी शान-शौकत दिखाने के लिए अनेक जानवरों का आखेट करके मार डालते थे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय तक आखेट प्रिय अंग्रेज शासकों के कुछ-कुछ इसी तरह के कारनामे थे। अपनी मजबूरी में निर्धन व्यक्ति भी वन्य जीवों की हत्या करते थे। लेकिन प्रसन्नता की बात है कि अब बचे हुए वन्य जीवों के आवासों को सुरक्षित करके उनकी अच्छी देखभाल की जा रही है।

पर्यटक उद्योग को निरन्तरता और विकास के लिए पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ और पीने पेय जल की आपूर्ति भी परम आवश्यक है। जैसे जैसे पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे ही तरण तालों नहाने-धोने, पीने, मलप्रवाह तथा स्वच्छता के लिए जल की आवश्यकता भी बढ़ रही है। भारत जैसे घने बसे देश में पानी की कमी और उसके प्रदूषण से गन्दगी और बीमारियाँ फैलती जा रही हैं। पर्यटकों के अनियन्त्रित प्रवाह से पर्यटन स्थल इन दशाओं से इतने प्रभावित हो रहे हैं कि अगली बार वे वहां आना ही पसन्द नहीं करेंगे। विकास कार्यों के परिणाम स्वरूप लंबी अवधि तक पड़ा मलबा, रसोई का अनुपचरित गन्दा पानी, कूड़े के ढ़ेर, गड्ढ़ों का भराव तथा ईधनों का फैलाव पर्यटकों को विकर्षित करते हैं। रेस्त्राओं की माँग को पूरा करने के लिए प्रदूषित जलाशयों में पाली गई मछलियों से एक नई समस्या

पैदा हो गई है। वातानुकूलक यंत्रों तथा विद्युत चालित इकाइयों से निकलने वाले काशा जल से तापमान बढ़ जाता है। वाहनों, रात्रि क्लबों, रेस्त्राओं, मनोरंजन पार्कों, परिवहन केन्द्रों (बस अड्डे, रेलवे स्टेशन आदि) तथा निर्माण के भारी उपकरणों के परिवहन, जैसे अनेक स्रोतों से उत्पन्न शोर जन पर्यटन की विकट समस्या है। समुचित रीति से असंरक्षित पर्यावरण के प्रतिकूल परिवर्तनों के प्रति पर्यटन उद्योग कितना संवेदनशील है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। पर्यटन की परिभाषा इस प्रकार है 'पर्यटन = प्राकृतिक सौन्दर्य + वन्य जीवन + सांस्कृतिक आकर्षण + पारितंत्र। ये सभी एक अविभाज्य तंत्र के घटक हैं। पर्यटन के मूल आधार को विनाश से बचाने के लिए इनका संरक्षण आवश्यक है।

श्रीनगर और नैनीताल जैसे नगरों में सुन्दर झीलों के किनारे होटल परिसर बन रहे हैं। झील के तट पर आकर्षक स्थिति की खोज-की होड़ में झील के आस-पास की भूमि मलबे के ढेर, और अनुपचरित मलप्रवाह से गंदी होती जा रही है और झीलों का आकार भी घट रहा है। गोआ के निवासियों ने अविचारित विकास कार्यों को रूकवाकर जन जागरण की शक्ति का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। इससे उन दिनों की याद ताजा हो जाती है 'जब चिपको आन्दोलन ने सफलता पूर्वक वनों के वृक्षों को विनाश से बचा लिया था। अपने प्राचीन स्मारकों और पुलिनों को बचाने के लिए होटलों के परिसरों की सीमाओं में परिवर्तन करवाकर, गोआ वासियों ने एक और सफल कहानी की रचना की है। केवल अपने लाभ की चिन्ता करने वाले होटल मालिकों और पर्यटक राज्य के पर्यावरण के संक्षरण लिए आन्दोलन करने वाले स्थानीय लोगों के बीच यह संघर्ष हुआ था। पहले नियम यह था कि कोई भी भवन पुलिनों से 500 मीटर की दूरी पर ही बनेगा लेकिन होटल मालिक इस दूरी को कम करके 200 मी. करना चाहते थे। इस परिवर्तन को गोआ वासियों ने लागू नहीं होने दिया।

हमारे प्राचीन स्मारकों की समुचित देख भाल नहीं हो रही है, उनकी भव्यता और आकर्षण के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया है। दिन प्रतिदिन अजन्ता, एलोरा और एलिफेंटा में आने और वायु के चलन में बाधा आती है वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस भीड़-भाड़ से अत्यधिक मात्रा में आर्दता पैदा हो रही है और वायु के चलन में बाधा आती है इससे भित्तिचित्रों के रंग फीके पड़ने लगे हैं। जैसलमेर का दुर्ग-नगर एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, लेकिन इस के आस-पास गन्दी नालियों के होने से घिनौने दृश्य पैदा हो गए हैं। हम्पी की मूर्तियों और मन्दिरों पर पुनरूद्धार की तकनीकों के सही ढंग से प्रयोग न होने के कारण अनेक दाग-धब्बे पड़ गए हैं। खजुराहो के मन्दिर के निकट बने हवाई अड्डे से वायुयान उड़ान भरते हैं तथा उतरते हैं। इनसे उत्पन्न कंपन से मन्दिरों की मूर्तियाँ क्षतिग्रस्त हो रही हैं। यह वायु मार्ग जल्दी मचाने वाले अनेक पर्यटकों के खोला गया था। दिल्ली के जन्तर मन्तर के चारों ओर गगन चुम्बी इमारतें बन गई हैं, इस कारण इसके उपकरणों पर आवश्यक धूप नहीं पड़ती, अतः यह अब खगोल वैज्ञानिक कामों के उपयोग में नहीं आ सकती।

प्रसिद्ध उर्दू शायर ज़ौक की कब्र पर शौचालयों का निर्माण तथा दिल्ली के दिल में बनी ग़ालिब की हवेली की दुर्दशा, लोगों की तथा राज्य प्रशासन की उदासीनता का ज्वलन्त उदाहरण हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के फीरोजशाह कोटला के सामने एक स्थान पर अमर शहीद भगत सिंह और राजगरु

की भेंट हुई थी। आजकल इस स्थान के निकट दुर्गन्ध फैलाता एक खुला मूत्रालय बना हुआ है।

हर दूसरे दिन अखबारों में छपता रहता है कि विश्व विख्यात ताजमहल में पहले जैसी चमक-दमक नहीं रही। इस विषय में कुछ लोगों को मानना है कि इसके निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों और पुराने-पन के कारण ऐसा हो रहा है। दूसरे लोग कहते हैं कि सारा दोष ताजमहल के आस-पास बनी सैकड़ों औद्योगिक इकाईयों और मथुरा के तेलशोधक कारखाने का है जो निरन्तर वायुमंडल में प्रदुषकों की बौछार कर रहे हैं। इसके पास बहने वाली यमुना नदी नगरों के पास बहनें वाली भारत की अन्य नदियों के समान एक गन्दे नाले का रूप ले चुकी है। भरतपुर पक्षीविहार से ले कर फिरोजाबाद के काँच के कारखाने तक ताजमहल के चारों ओर के 10,500 वर्ग किलोमिटर क्षेत्र को 'ताज समलम्ब' का नाम दिया गया है। एक योजना के अनुसार इस क्षेत्र के सारे कारखाने बन्द किए जाएँगे। हरित पट्टी का विकास होगा तथा इस क्षेत्र से गुजरने वाली सड़कों पर चलने वाले असंख्य वाहनों का मार्ग बदल दिया जाएगा। ताज के आस-पास के पर्यावरण के प्रमुख उपभोक्ताओं में , गाँव के किसान, कारखाने, स्थानीय निवासी तथा वे 14000 ट्रक है, जो प्रतिदिन इस क्षेत्र से गुजरते हैं। जब तक संपूर्ण पर्यावरण को वर्तमान तथा भावी विकृति से नहीं बचाया जाता, तब तक अलग से एकाध कदम उठाने से ताज का संरक्षण नहीं किया जा सकता। आगरा और उस के आस-पास के लोगों का रहन-सहन तथा कार्य करने की दशाएं अस्वास्थ्य कर हैं। सबसे पहले इन लोगों की दशा सुधार कर इनका सहयोग लेना चाहिए। पर्यटन से होने वाली आय का एक भाग इस क्षेत्र की दशा सुधारने में खर्च किया जा सकता है। सबसे पहले इस क्षेत्र की भूमि का उपयोग करने वाले विभिन्न लोगों के स्वार्थों के टकराव को दूर करने के उपाय खोजने होंगे। भारत में इस प्रकार के स्मारकों में प्रवेश का शुल्क संसार के इसी तरह के अन्य स्मारकों की तुलना में बहुत कम है। शुल्क में वृद्धि करके आय को बढ़ाना होगा।

दिल्ली में वायु प्रदूषण की समस्या से सभी परिचित हैं। यहां पैट्रोलियम से चलने वाले वाहनों की संख्या बड़ी तजी से बढ रही है। उद्योगों का कूड़ा कचरा तथा अनुपचरित मलजल बहकर यमुना में जा रहा है। बेचारे साइकिल सवार को तो वस्तुतः मुख्य सड़कों से नीचे ही धकेल दिया गया है। अधिकतर स्कूटर और कारें मध्यम वर्गीय नव धनाढयों के द्वारा प्रतिष्ठा के चिन्ह के रूप में खरीदी जा रही है। यही नहीं इनका उपयोग छोटी-छोटी दूरियां तय करने के लिए किया जाता है। ऐसा लगता है कि लोगों ने जमीन पर अपने पैरों से चलना ही छोड़ दिया है। इससे न केवल लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है, अपितु शताब्दियों पुराने इस नगर के अनेक पुराने स्मारकों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इन स्मारकों की वाहय चमक-दमक को बनाए रखना कठिन हो रहा है।

पर्यटन सचमुच में एक चिमनी रहित निर्धूम उद्योग है। इससे कोई प्रदूषक बाहर नहीं निकलता लेकिन ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार पर्यटन क्षेत्र में वायु जल और भूमि का बढ़ता प्रदूषण पर्यटन के आधारभुत संसाधन को ही खोखला कर रहा है। पर्यटकों के प्रवाह पर नियंत्रण करने मात्र से समस्या का समाधान होने वाला नहीं है। इसके लिए स्थानीय लोगों और प्रशासन को अधिक सचेत होने की आवश्यकता है।

- पर्यावरण के सभी घटकों अर्थात मृदा, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, जल तथा विरासत पर्यटन के स्मारकों को बड़े पैमाने के पर्यटन के दुष्प्रभावों से बचाना है।
- हमारी उपेक्षा तथा पर्यटकों की सख्यां में वृद्धि से हमारे प्राचीन स्मारको में जो विकार पैदा हो रहे हैं, उनके कुछ उदाहरण इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी है।

(ख) स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

पर्यटकों की अनियन्त्रित भारी भीड़ का स्थानीय संसाधनों पर बहुत दबाव पड़ता है। पहला प्रभाव तो यह होता है कि पर्यटकों की यात्रा से धन एक प्रदेश से दूसरे में चला जाता है। यह अपने आय में विकास का स्वागत योग्य पक्ष है। लेकिन एक अल्पविकसित पर्यटक प्रदेश में इससे नई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं, जैसे होटलों के निर्माण से भूमि की बढ़ती हुई माँग के कारण उसकी कीमतें बहुत ऊँची हो जाती हैं। दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं जैसे दूध, सब्जियों और फलों की कीमतें कई गुना बढ़ जाती है। पर्यटकों की सेवा में लगे कर्मियों की मजदूरी बढ़ने से स्थानीय लोगों के भवनों के निर्माण या मरम्मत के लिए और कृषि कार्यों के लिये मजदूरों की कमी हो जाती है। यदि कुछ पर्यटक स्थलों पर भारी संख्या में कर्मी निरन्तरबाहर से आ जाते हैं, तो वहां रोजगार के नए अवसर पैदा होने पर भी स्थानीय लोग बेरोजगार ही रह जाते हैं।

पर्वतीय पर्यटक स्थलों पर थोड़े से व्यस्त दिनों में पर्यटकों की मामूली भीड़ से भी पानी और बिजली की स्थानीय आपूर्ति पर भारी दबाव पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देश में जब बहुत सी बसें पैकेज टूअरस में लग जाती हैं, तो अन्य पर्यटकों की मांग पूरी नहीं हो पाती तथा स्थानीय लोगों के यातायात के लिए चलने वाली बसों में अपार भीड़ हो जाती है। स्थानीय लोग तथा पर्यटक मिलकर इन सुविधाओं का उपभोग करने लगते हैं। लेकिन इन की आपूर्ति में कमी और महँगे हो जाने के दुःख स्थानीय लोगों को ही झेलने पड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियों में रोजगार मिलने से जो लाभ होता है, उतनी ही हानि स्थानीय निवासियों के समाज कल्याण में हो जाती है। भूमि की बढ़ती कीमतें छोटे भूमिधरों को भूमि हीन होने पर बाध्य कर देती हैं। खेती में लगे लोग लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में रोजगार की तलाश में चले जाते हैं। इससे खेती करने के लिए लोगों की कमी हो जाती है। इससे प्रभावित क्षेत्र में कृषि भूमि की उत्पादकता घट सकती है। ये और इसी तरह की अन्य समस्याएँ निश्चय ही संक्रमण काल की समस्याओं जैसी है। फिर भी इन के प्रति माननीय दृष्टिकोण अपना ने की आवश्यकता है और स्थानीय प्रशासन को बड़ी सावधानी से इनका समाधान करना चाहिये। प्रमुख पर्यटक स्थलों पर उनकी क्षमता के अनुसार ही पर्यटकों की संख्या रहे, इसके लिए पहले से ही सुविधाओं को बढ़ाने की योजना बनाना जरूरी है। यदि स्थानीय अर्थव्यस्था पर पर्यटकों की संख्या से पड़ने वाले दबावों को एक सीमा में नियन्त्रित नहीं किया गया तो पर्यटक संसाधन, भले ही उनका उपयोग न हो, नष्ट हो सकते है।

- किसी भी पर्यटक प्रदेश में पर्यटकों की साधारण सी लेकिन अनियन्त्रित भीड़ के कारण, मजदूरों की मजदूरी, भूमि के कीमतें, तथा दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं के भाव काफी बढ़ सकते हैं।
- जल और ऊर्जा का उपभोग पर्यटक और स्थानीय निवासी दोनों ही करते हैं। लेकिन मांग की तुलना में आपूर्ति न होने से इनकी कमी हो जाती है, इस स्थिति में सबसे ज्यादा कष्ट स्थानीय लोगों को ही उठाने पड़ते हैं।
- इन समस्याओं को रोकने के लिए पर्यटन स्थल में उसकी क्षमता के अनुरूप उतनी ही संख्या में पर्यटकों को आने की अनुमति दी जानी चाहिए।

(ग) स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव

भारत जैसे अल्प विकसित देशों में पर्यटन से मिलने वाले आर्थिक लाभों का सदैव स्वागत हुआ है। लेकिन इसके सामाजिक प्रभावों को पचाना मुश्किल हो रहा है। ये पर्यटक प्रदेश में रहने वाले लोगों में रोष पैदा करते हैं। यह दो बिल्कुल अलग ढंग के मूल्यों का टकराव है। गांधी जी ने कहा था कि राष्ट्र केवल प्रजातन्त्र और आर्थिक विकास पर ही जीवित नहीं रहते। उनके लिए अपनी विरासत पर गर्व करते हुए, अपनी अलग पहचान बनाए रखना बहुत जरूरी है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि स्वतन्त्रता के बाद हमारे लोगों ने आवश्यकता नहीं है कि स्वतन्त्रता के बाद हमारे लोगों ने अपनी कला और संस्कृति को पुनर्जीवित करने के भरसक प्रयत्न किए हैं। इससे देश के विभिन्न प्रदेशों की एक स्पष्ट पहचान बन गई है।

इसके बाद आया पांच सितारा होटलों की संस्कृति का झंडा लहराता अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन। जब चेन्नई के निकट लोकप्रिय नगर महाबलीपुरम को पूरी तरह से पर्यटन स्थल बनाने की बात चलती है, तो यह संस्कृति सभी प्रकार की सीमाओं का उल्लंघन कर जाती है। अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने इसे संसार के सबसे अधिक महत्वपूर्ण दस पर्यटन स्थलों में से एक के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव रखा था इस प्रस्ताव को स्वीकार करने का अर्थ शायद यह होगा कि स्थानीय लोगों को यह क्षेत्र खाली करना पड़ेगा। इससे विदेशियों को अपनी मनमानी करने की पूरी छूट मिल जाएगी तथा उनकी स्त्रियाँ पुलिनों पर खुले रूप में घूम सकेंगी और लेट सकेंगी। इस प्रकार के फैशन का उन्माद स्थानीय रीति रिवाजों से मेल नहीं खाता है। इसे एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन नगर स्वीकार कर लेने के बाद तो स्थानीय लोगों और पर्यटकों के बीच का संभावित संघर्ष एक ही झटके में खत्म हो जाता। इसके प्रस्तावक और समर्थक लोगों का कहना था कि यहाँ मनोरंजनात्मक पर्यटन से आय बहुत बढ़ जाएगी। लेकिन कुछ दूसरे लोग इससे स्वतन्त्र भारत में सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की वापसी मान रहे थे।

देश के अन्य कई पर्यटक स्थलों से भी कई स्तरों पर सांस्कृतिक संघर्ष के समाचार मिल रहे हैं। इस प्रकार की घटनाएँ तीन संभावित तरीकों से घटती हैं।

(i) जहां पर्यटक, बाजार में बिकने वाली अन्य वस्तुओं की तरह दी गई वस्तुओं और सेवाओं को खरीदते हैं। इसमें आतिथेय प्रदेश के अनेक लोग निराश हो जाते हैं, क्योंकि इन सेवाओं की बिक्री से होने वाली आय में, उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं पहुँचता। पर्यटकों को दी गई सेवाएँ और कुछ नहीं अपितु अच्छी से अच्छी कीमत पर वस्तुओं या सेवाओं को बेचने की केवल एक तरकीब है। पर्यटकों का स्वागत सत्कार पारंपरिक न होकर, शुद्ध रूप से व्यापारिक होता है। स्वागत के तौर-तरीकों में स्थानीय लोगों के व्यक्तिगत जीवन की कोई भी झलक नहीं दिखाई पड़ती।

(ii) जहां पर्यटकों और अतिथेयों का प्रत्यक्ष रूप में एक दूसरे का सामना हो जाता है, तो संपर्क के ऐसे क्षेत्रों में स्त्रियों सहित स्थानीय परिवारों के अनावश्यक रूप से फोटो खींच लिए जाते हैं। इससे आशंकाएँ जन्म लेती हैं, क्योंकि पर्यटकों को स्थानीय लोगों के सामाजिक रीतिरिवाजों आकांक्षाओं और जीवन पद्धति का कोई ज्ञान नहीं होता। ऐसे संपर्क में पर्यटक स्थानीय लोगों को केवल जिज्ञासा की वस्तु मानकर व्यवहार करते हैं। मन्दिरों में, उत्सवों और त्यौहारों में, स्थानीय मर्यादाओं का पालन न करते हुए जन पर्यटक बेरोक टोक घुस आते हैं, तब बड़ी परेशानी होती है। ऐसी आशंकाओं का निवारण तभी हो सकता है, जब या तो पर्यटक बार-बार आएँ या वहां अधिक दिनों तक ठहरें।

(iii) दोनों पक्षो की ऐसी भेंट तब होती, जब वे साथ-साथ बैठकर विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। ऐसे संपर्कों से कोई हानि नहीं होती; क्योंकि इन का उद्देश्य मुख्य रूप से एक दूसरे की संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त करना होता है।

सामान्यतः भारत जैसे अतिथेय देश के पर्यटक प्रदेश में रहनेवाले लोगो का जीवन स्तर विदेशी पर्यटकों के देश की तुलना में नीचा होता है। एक औसत विदेशी पर्यटक एक सप्ताह में इतना खर्च कर देता है या उपभोग कर लेता है, जितना कि दो या तीन स्थानीय लोग मिलकर पूरे वर्ष में खर्च करते होंगे। दोनों पक्षों के व्यवहारों में यही सबसे बड़ा अन्तर है, जिसके कारण स्थानीय लोग अपनी परंपराओं से दूर हटते जाते हैं। तंग हाल गरीबों के बीच यह शाह खर्च अमीरों का व्यवहार है। इस स्थिति में दो छोरों पर खड़े संपन्न और विपन्न समाज के सदस्यों के बीच एक दरार पैदा हो जाती है।

विदेशी पर्यटकों के आचरण से स्थानीय युवकों विशेष रूप से युवतियों में नई इच्छाएं जाग्रत हो जाती हैं, और वे घर की चार दीवारी में बन्द पारम्परिक बन्धनों को तोड़कर बाहर निकल आती है। समाज के बड़े-बूढ़ों का युवक-युवतियों पर बंधन ढीला पड़ जाता है। बच्चे युवक-युवतियां पर्यटकों की जीवन पद्धति का अनुकरण करने लगते हैं। होटलों में ठहरकर पर्यटक, स्थानीय लोगों के रहन-सहन को निकट से नहीं देख पाते। उन्हें उनके उत्सवों आदि में भाग लेने का मौका भी नहीं मिलता। आज का जन पर्यटन एक छुट्टियों जैसा वातावरण पैदा कर देता है, क्योंकि पर्यटक मुख्य रूप से आमोद-प्रमोद-प्रिय ही होते हैं। पर्यटक स्त्री-पुरूषों का खुला-खुला सा व्यवहार, आपसी मेलजोल, प्रेम प्रदर्शन विशेष रूप से उनकी अर्द्धनग्न स्त्रियां स्थानीय पुरुषों को मुख्य रूप से आकर्षित करती हैं। समय के साथ-साथ स्थानीय युवकों की उपभोग की प्रवृत्तियों, पद्धतियों और भोजन की आदतों में परिवर्तन आ जाते हैं। वे घर से बाहर

होटलों में खाना खाने लगते हैं। उनमें नई इच्छाएं, आकाक्षाएं, अंगड़ाइयां लेने लगती हैं। वे पर्यटकों की तरह जीवन का आनन्द लेना चाहते हैं। समय बीतने पर पर्यटकों की उपस्थिति से उन पर परिवार की परंपराओं की जकड़ ढीली पड़ने लगती हैं। पर्यटकों की सेवा करके युवक जितना कमाते हैं, उसका अधिकांश अपनी मौज-मस्ती पर खर्च कर देते हैं और उन के दीन-हीन परिवार तरसते रह जाते हैं। इस परिवर्तन को स्थानीय युवकों में सांस्कृतिक संक्रमण की घटना कहा जाता है। अल्पविकसित तथा विरल जनसंख्या वाले छोटे क्षेत्र में पर्यटन को दुष्प्रभाव अधिक देखने को मिलते हैं।

यह वह स्थिति है जो हमें द्वीपों में, पर्वतों की घाटियों में और दूर-दराज के क्षेत्रों में ही दिखाई पड़ रह है। सघन जनसंख्या वाले, बड़े आकार के तथा बेहतर सुविधाओं वाले पर्यटक प्रदेशों में जहां अधिकतर लोग इस उद्योग में लगे हैं, ऐसे दुष्प्रभाव कम दिखाई पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि बड़े और विकसित पर्यटक स्थलों में पर्यटक और स्थानीय लोग अक्सर ही आपस में मिलते-जुलते रहते हैं। इससे किसी प्रकार के सन्देह पैदा नहीं होते हैं। इसके साथ ही स्थानीय लोगों के ऊँची शिक्षा के स्तर के कारण सांस्कृतिक दूरी कम हो जाती है और अस्वस्थ सामाजिक परिवर्तन धीरे-धीरे विलुप्त हो जाते हैं। जब सभी स्थानीय लोगों में सम्पदा और कौशल की भागी दारी होती है तथा उनकी परंपराएं लचीली हो जाती हैं, तो आतिथेय क्षेत्र पर बड़े पैमाने का पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।

- विदेशी पर्यटक और स्थानीय लोगों को भेंट दो भिन्न संस्कृतियों का संघर्ष है, जो अनेक पर्यटक स्थलों पर दिखाई पड़ता है।
- पर्यटकों और अतिथेयों में केवल व्यापारिक संबंध होता है। यह संबंध बिल्कुल वैसा ही है जैसा बाजार में सामाज या सेवाओं के विक्रेता और क्रेता के बीच होता है।
- पर्यटकों द्वारा जिज्ञासा की वस्तु के रूप में व्यवहार किए जाने पर स्थानीय लोग चिड़ जाते हैं।
- पर्यटक सामान्यतः अति उपभोक्तावादी समाज के आमोद-प्रमोद प्रिय लोग होते है, जो निर्धन और अभावग्रस्त लोगों के बीच आ टपकते हैं।
- अतिथेय क्षेत्र के युवक, पर्यटकों के व्यवहार की नकल करके संस्कृति संक्रमण के शिकार हो जाते हैं। उन पर परिवार की परंपराओं की जकड़ ढीली हो जाती है। विकास के आरंभिक चरणों में जन पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव अधिक हानिकारक होते है।

पाठगत प्रश्न-31.1

1. निम्न लिखित कथनों में सही शब्द को चिन्हित कीजिएः
   (i) यदि नम भूमियों वन भूमियों में गाद मिट्टी भरती है या निकाल ली जाती है, तो पक्षी और जल के जीव दुःखी हो जाते हैं।
   (ii) ताज के चारों ओर दस हजार वर्ग कि.मी. से अधिक के सुरक्षित क्षेत्र को अब जात परिपथ ताज समलम्ब कहते हैं।

(iii) यदि पर्यटन के लिये सुविधाओं में वृद्धि की गति धीमी है, तो किसी क्षेत्र में पर्यटकों की अधिक संख्या से इसकी पर्यटकों को संभालने की क्षमता घट जाती है बढ़ जाती है।

2. जन पर्यटन के स्थानीय युवकों पर पड़ने वाले किन्ही तीन दुष्प्रभावों के नाम बताइये जो उन्हें अपनी संस्कृति से अलग कर देते हैं।

3. अतिथेय और पर्यटकों के आपस में मिलने पर निम्नलिखित में से किस प्रकार के पर्यटन के क्रिया कलाप होते है:

(i) आमने-सामने भेंट (ii) क्रेता-विक्रेता की भेंट (iii) साथ-साथ की एक भेंट।

4. निम्न लिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए:

(i) महाबलीपुरम को पूरी तरह से पर्यटक नगर बनाने के लिए क्यों चुना गया था?

(ii) जब पर्यटकों का अधिक संख्या में आगमन होता है, तो जल और बिजली की कमी तथा कीमतों में वृद्धि से सब से अधिक स्थानीय लोग दुःखी होते हैं।

(iii) खुजराहो के मन्दिरों की मूर्तियों पर किस बात का बुरा प्रभाव पड़ रहा है?

(iv) पर्यटकों की अपार भीड़ के कारण अजन्ता की गुफाओं के भित्तिचित्र, किस प्रकार खराब हो रहे हैं?

(v) होटल के मालिक होटलों के निर्माण के लिए पुलिनों और झीलों का अवैध अतिक्रमण क्यों करते हैं?

(vi) प्रदूषण का अत्याधिक्य किस प्रकार दिल्ली के प्राचीन भवनों को प्रभावित कर रहा है।

5. निम्नलिखित स्तंभों के सही जोड़े बनाइये:

स्तम एक	स्तंभ दो
(i) डामर की सड़कों पर बनी दरार	(क) स्वार्थ संघर्ष
(ii) दुर्दमनीय तथा अवांछित पौधों को आवरण	(ख) पर्यटक होटल तथा कैंपो के मैदान
(iii) अनुपचरित मल जल, कूड़ाकरकट यातायात	(ग) भारी पर्यटक वाहनों का यातायात
(iv) अनेक उपभोक्ताओं के द्वारा भूमिका उपयोग	(घ) जन पर्यटन
(v) एक नव उपनिवेशी की भारत में वापसी	(ङ) मनुष्य के कदमों से असहाय कुचलन

31.6 कार्य कौशल की योजना

भारत में पर्यटन के विकास और विस्तार की अनन्त संभावनाएं है। भारत में बहु-उद्देशीय पर्यटन के विकास के लिए विद्यमान आकर्षणों और सुविधाओं के विषय में पहले ही चर्चा कर चुके हैं।

जब अनेक पर्यटक, हमारे द्वारा प्रदत्त वस्तुओं और सेवाओं की कीमत अदा करने को तैयार होते हैं तो इससे से व्यापारिक संबंध विकसित होता है। पर्यटन के उदाहरण में यह संबंध इस सीमा तक विकसित हो गया है कि आजकल पर्यटक के संवर्धन को 'पर्यटन हाट कहा जाने लगा है।

प्रारंभिक दिनों की अन्वेषकों की यात्राओं या यायावरों (घुमक्कड़ों) की यात्राओं में यात्रियों और

आतिथयों में एक घनिष्ठ संबंध होता था। लेकिन आजकल जन पर्यटन का आयोजन बड़े-बड़े समूहों के रूप में होता है। ऐसी यात्राओं का आयोजन कोई व्यपारिक संस्थान करता है। ये पूर्व निर्धारित यात्राएं होती हैं। इसी कारण ये दिन 'संस्थागत पर्यटन' के हैं। इस प्रकार के पूर्व निधारित पर्यटन की योजना संस्थाएं समूह के सदस्यों के लिए पहले से ही बना लेती हैं। इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटक थोड़े से समय में बड़ी जल्दी-जल्दी बड़े-परिपथों की यात्रा करते हैं। आयोजक उनकी सारी सभी सुविधाओं और आवश्यकताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। लेकिन इसमें पर्यटकों की स्वतंत्रता पर अंकुश लग जाता है। वे अपने इच्छा से न तो इधर-उधर जा सकते हैं, न कहीं ज्यादा समय ठहर सकते हैं, न ही दर्शनीय स्थानों को इच्छानुसार अधिक समय तक देख सकते हैं और न ही अपनी रूचि के मनोरंजनात्मक क्रिया कलापों में हिस्सा ले सकते हैं।

धीरे-धीरे की यात्राओं के दिन अब लद गए हैं। अब तो तेज गति वाले जन पर्यटन का युग है। अन्वेषण यात्राओं का स्थान व्यापारिक और मनोरंजनात्मक पर्यटन ने ले लिया है। एकाकी या परिवारिक यात्राएँ कम हो गई हैं। अब तो संबंधित संस्थाओं द्वारा पूर्व निर्धारित पर्यटन का चलन है। यह पर्यटन संवर्धन के इतिहास में एक नया मोड़ है।

पर्यटन के सभी पक्षों में आए भारी परिवर्तनों को देखते हुए, यह आवश्यक हो गया है कि इसके लिए पहले से ही अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल योजनाएं बना ली जाएं, लक्ष्य निर्धारित कर लिए जाएं विकल्प ढूंढ लिए जाएं तथा कार्य योजनाएं तैयार कर ली जाएं।

सबसे पहले पर्यटक क्षेत्र की विशेषताओं का सर्वेक्षण करना जरूरी है, जिससे पता चलेगा कि इसकी पर्यटन क्षमता कितनी है तथा पर्यटक संसाधनों के विकास की संख्या की जानकारी लेनी होगी तथा निकट भविष्य में आने वाले पर्यटकों की संख्या का अनुमान भी लगाना होगा। पर्यटकों के ठहरने की अवधि को लंबा करने के लिए सभी संभव आकर्षणों की पहचान करनी होगी। अपने उपभोक्ता पर्यटकों की मनोवृत्तियों और रूचियों में होने वाले संभावित परिवर्तनों की खोज भी जरूरी है। इन सब आंकड़ों से हमें पर्यटन केन्द्रों की अधिक से अधिक पर्यटकों को संभालने की क्षमता का आकलन कर सकेंगे।

इसके बाद पर्यटकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आधारभूत आवश्यक सेवाओं को जुटाने के बारें में सोचना होगा। इसके लिये आवश्यक पूंजी-निवेश का आकलन जरूरी है तथा यह पूंजी सार्वजनिक या निजी क्षेत्रों में से, किस क्षेत्र से आएगी। यात्रा/पर्यटन के संवर्धन के लिए सही-सही योजनाएं बनाने के लिए इस बात का अनुमान लगाना जरूरी है कि किस स्थान पर कितनी सुविधाएं उपलब्ध करानी हैं। योजना बनाने वालों के लिए ये दो प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय और प्रादेशिक विकास की योजनाओं के निर्धारित सभी लक्ष्यों के साथ ही पर्यटन के विकास का ताल-मेल भी बैठाना जरूरी है।

क्या पर्यटक उद्योग अर्थात यात्राओं के सवंर्धन के साथ अन्य उद्योगों जैसा ही व्यवहार होना चाहिए पर्यटन में सामान्यतः लोगों को अल्पकालिक रोजगार मिलता है। शेष समय में संबधित और सारे प्रयत्न बेकार पड़े रहते हैं। पर्यटन के अव्यस्त समय में कर्मियों के लिए रोजगार के वैकल्पिक अवसर तलाशने होंगे।

पर्यटन में रोजगार के अवसरों का मूल्यांकन हमारे विदेशी मुद्रा के भंडार में योगदान के संदर्भ में करना चाहिए। हमें यह जांच पड़ताल भी करनी पड़ेगी कि अर्थ व्यवस्था के संबंधित क्षेत्रों में पर्यटन से किसी तरह की प्रेरणा मिल सकती है। पर्यटन के अपने आकर्षण की बिक्री से मिलने वाले लाभों के बावजूद हमें यह देखना भी जरूरी है कि कहीं कोई प्रदेश केवल पर्यटन के विकास से अर्जित आय या उससे मिले रोजगार पर ही तो, पूरी तरह निर्भर नहीं हो गया है। ये ऐसे संकट है जो समय-समय पर पर्यटकों की संख्या में एकाएक कमी आजाने पर उत्पन्न हो जाते हैं। लोग पर्यटन के द्वारा जीवकोपार्जन तभी कर सकते हैं, जबकि इसका विकास स्थाई रूप में होता रहे।

पर्यटक प्रदेश भारी उद्योगों या धूल उड़ाने वाले, धुआँ उगलने वाले या शोरगुल करने वाले उद्योगों की स्थापना के लिए उपयुक्त नहीं है। हिमाचल प्रदेश के सीमेन्ट के कारखाने हैं, जिनकी स्थापना कुछ वर्ष पूर्व हिमाचल के चूने के पत्थर के भंडारों के आधार पर की गई थी। इसके परिणाम बड़े घातक सिद्ध हुए; क्योंकि इससे न तो वायुमंडल स्वच्छ रह सका और न ही पर्यावरण पर्यटकों को आकर्षित कर सका। लेकिन पर्यटन के अव्यस्त महीनों में वैकल्पिक रोजगार देने के लिए लघु उद्योगों की सफलता पूर्वक स्थापना की जा सकती है। लघु उद्योगों की स्थापना से पर्यावरण के आकर्षण संरक्षित रह सकते हैं, तथा इनमें रोजगार के अवसर उपलब्ध होने कारण महत्वपूर्ण पर्यटक प्रदेश में पर्यटन को चिरकालिक बनाया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में शीतकालीन पर्यटन को भी प्रोत्साहित करना चाहिए, इससे पर्यटन की अव्यस्त अवधि को छोटा किया जा सकता है।

जन पर्यटन के विषय में एक कठोर निर्णय भी लेना पड़ सकता है। कभी जन पर्यटन की मन्द गति को प्रोत्साहित करना पड़ सकता है, य. उसे कहीं भी या सर्वत्र द्रुत गति से विकसित होने की अनुमति देनी पड़ सकती हैं। पर्यटक का क्रमिक विकास और यात्रा का मंद प्रोत्साहन पर्यटकों के लिए अधिक अच्छा होता है। यह पर्यटकों के आवागमन को नियन्त्रित करने के एक उपाय है, इसमें यह देखना पड़ता है कि किसी पर्यटन स्थल पर किसी एक समय पर्यटकों की संख्या उसकी क्षमता से अधिक न हो जाए। इससे हम जन पर्यटन के दुष्प्रभावों से बच सकते हैं। इससे स्थानीय लोगों के लिए आवश्यक स्थानीय संसाधनों तथा सामाजिक सुविधाओं पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकता है। जन पयर्टन आज की आवश्यकता बन गया है। फिर भी इसके तीव्र विकास के स्थान पर नियोजित विकास के द्वारा देश की सांस्कृतिक धरोहर को होने वाली हानियों को रोका जा सकता है। युवकों को भी अन्य संस्कृतियों के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकता है।

किसी पर्यटन स्थल के विकास की एक विशेष अवस्था में पहुँच जाने के बाद, उसके और आगे विकास के विषय में या इसके अतिक्रमण को पुनर्जीवित करने का विचार करना भी जरूरी है। पर्यटन स्थलों की पर्यटक-क्षमता का निरंतर आकलन योजना का प्रमुख अंग होना चाहिए।

पर्यटकों के आवास के एक अनौपचारीक स्वरूप पर हमारे देश में अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया गया है। किसी स्थानीय एजेन्सी की देख-रेख में पारिवारिक घरों में पर्यटकों को सशुल्क अतिथियां के रूप में ठहराने से होटलों में आवास की तंगी को कम किया जा सकता है। विदेशी और स्वदेशी पर्यटकों दोनों के ही लिए पारंपरिक पद्धति से चलने वाले कम बजट के होस्टलों तथा अवकाश गृहों की व्यवस्था भी की जा सकती है।

अपने लोगों को यह समझाने का महत्वपूर्ण कार्य है कि पर्यटन विकास और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने वाला साधन है। इस बात का बहुत प्रचार है कि पर्यटन स्थलों के मूल निवासी अपनी संस्कृति से दूर हट रहे हैं और विदेशी संस्कृति को अपनाने लगे हैं। पर्यटन के विकास के लिए इस प्रचार को रोक कर, पर्यटकों की संस्कृति के अच्छे गुणों तथा पर्यटन के अन्य लोगों की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित करना होगा। स्थानीय क्षेत्रों के आकर्षणों के विषय में समाज को जागरूकता लोगों में गर्व का भाव उत्पन्न कर सकती है। इससे वे अपनी विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए तैयार हो जाएंगे तथा अपने हस्त शिल्प, लोक कलाओं, नृत्यों और सामान्य लोगों के मनोरंजन केअन्य रूपों में नई चेतना का संचार कर सकते हैं। इन सब को पर्यटकों के समक्ष अगर सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए तो आगन्तुक पर्यटक इनमें विशेष रूचि लेने लगेगें और दूर-दूर से चलकर भी पर्यटक ऐसे क्षेत्रों में पहुँचने लगेगें।

यात्रा और पर्यटन के संपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तीन बिन्दु -जागरूकता, सुविधा तथा बाजार वाली एक कार्य योजना का सुझाव दिया गया है। पहला बिन्दु है जागरूकता-अर्थात समाज पर्यटन, की क्षमताओं को आर्थिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने वाले साधन के रूप में पहचान ले। आतिथेय के रूप में हमें अपने विषय में पूरी जानकारी होनी चाहिए तथा अतिथि पर्यटकों का हार्दिक स्वागत होना चाहिए। दूसरा बिन्दु है सुविधाएं-अर्थात पर्यटक क्षेत्रों में परिवहन की पर्याप्त और सहज सुविधा, आवासीय तथा अन्य सुविधएं होनी चाहिए, तभी पर्यटक आकर्षित होगें। तीसरा बिन्दु है बाजार के प्रति जागरूकता अर्थात लोगों में अपनी विरासत प्रादेशिक तथा स्थानीय भूदृश्यों के आकर्षणों तथा विभिन्न प्रकार की सेवाओं को पर्यटकों के बेचने की समझ पैदा होनी चाहिए। पर्यटन को एक अत्यन्त जटिल उत्पाद के नाम से पुकारना एकदम उचित है। पर्यटन उद्योग की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक विभागों और संगठनों के समन्वित प्रयासों की जरूरत है।

महाराजाओं और नवाबों के पुराने राजमहलों और भवनों की प्राचीन भव्यता और शोभा को वापस लाने के लिए थोड़ी सी मरम्मत की जरूरत है। ये पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र तो बनेगे ही, लेकिन इनका उपयोग सभी प्रकार के पर्यटकों के आवास के लिए भी किया जा सकता है यदि इस प्रकार के देशी

आवास वैभव और सुविधापूर्ण हैं तो इनका उपयोग होटलों की तरह किया जा सकता है। कुछ भूतपूर्व राजाओं और नवाबों ने कहीं-कहीं ऐसा किया भी है। मध्यम आयवर्ग के पर्यटकों को परिवार सशुल्क अतिथि के रूप में अपने घरों में ठहरा सकते हैं। लेकिन लोग इसे अभी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। पर्यटकों के आवास के लिए राजस्थान में जयपुर क्षेत्र की हवेलियों का पुनरूद्धार किया जा सकता है। इस प्रकार के आवासों में एक जाति विशेष की संस्कृति और परंपराएं रची-बसी होती है, जो होटलों में कहां उपलब्ध ? इस दृष्टि से यह एक सर्वोत्तम विकल्प है।

प्रशिक्षित यात्रा पथ प्रदर्शकों, यात्रा एजेण्टों, तथा होटल प्रबन्धन के सभी कर्मियों को 'व्यावसायिक मध्यस्थ कहा जाता है। पर्यटन प्रोत्साहन के किसी भी कार्यक्रम के ये सभी प्रमुख अंग हैं। ये लोग पर्यटकों को उनकी रूचि कें क्षेत्रों के नए आकर्षणों के विषय में अच्छी जानकारी दे सकेंगे। आनेवाले वर्षों में हमें विभिन्न भाषा-भाषी पर्यटकों के लिए दुभाषीयों की जरूरत होगी। इससे इस क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे।

प्रशिक्षण की अवधि में सभी व्यावसायिकों को पर्यटकों के विस्तृत प्रसार के नियोजित कार्यक्रमों तथा पर्यटन के नए केन्द्रों और पर्यटन के नए प्रकारों को चुनकर पर्यटकों की मनोदशाओं को प्रफुल्लित रखने के विषय में पूरी-पूरी जानकारी दी जानी चाहिए प्रशिक्षण संगठनों को उन्हें यह भी बताते रहना चाहिए कि विभिन्न पर्यटक प्रदेशों में पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित क्रियाकलापों के मध्य होने वाली प्रतिद्वन्द्विता को कम करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

- क्रमिक पर्यटक से जन पर्यटक और त्वरित पर्यटन, प्रारम्भिक के अन्वेषी और एकल यात्राओं से व्यापारिक, शुद्ध मनोरंजनात्मक तथा पूर्वनिर्धारित यात्रा कार्यक्रमों के रूप में परिवर्तन, पर्यटन प्रोत्साहन के इतिहास में एक नया मोड़ है।
- पर्यटन की कार्य योजनाओं की ठोस योजना को कई क्रमिक चरणों में पूरा किया जाना चाहिए। सबसे पहले किसी क्षेत्र के पर्यटक संसाधनों का अध्ययन होना चाहिए। इसके बाद पर्यटकों की अनुमानित संख्या, उनके द्वारा अपेक्षित आधार भूत सुविधाओं का आकलन तथा निवेश के संभावित स्रोतों का पता लगाना चाहिए।
- पर्यटन का विकास चिरकालिक आधार पर होना चाहिए, जिससे पर्यटन से जुड़े लोगों को अव्यस्त अवधि में और किसी भी कारण से पर्यटकों की संख्या कम होने पर, लघु उद्योगों में काम मिल सके।
- पर्यटकों के आवागमन को नियंत्रित करने के लिए ठोस कार्ययोजना यह हो सकती है कि किसी चुने हुए क्षेत्र में पर्यटन के संभावित प्रकारों का क्रमिक विकास किया जाए।
- पर्यटन के विकास की तीन बिन्दुओं वाली कार्य योजना का पहला बिन्दु है- लोगों में जागरूकता। दुसरा है- पर्यटन के अनुकूल आधारभूत सुविधाएँ और तीसरा है- प्राकृतिक आकर्षणों विरासत और सेवाओं का विपणन।

31.5 कार्ययोजना का विनियोग- एक विशिष्ट अध्ययन।

पर्यटन के संवर्धन तथा इस की यात्रा पक्ष विषयक कार्ययोजना हमारे देश में अभी तक विचार विमर्श की अवस्था में ही है। प्रादेशिक विकास के लिए स्वीकृति सामान्य प्रस्तावों में इन्हें भी शामिल होना चाहिए। इस महान कार्य के पूरा होने में अभी देरी है, अतः हमारे कुछ राज्यों ने सुझाए गए उपायों में से कुछ को लागू कर दिया है। भारत के पश्चिम के आधे भाग में अनेक राज्यों ने कुछ पर्यटक परिपथ बनाए हैं। इन परिपथों पर स्थित पर्यटकों की रुचि के स्थानों को शामिल करके यात्रा के पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम शुरु किये हैं। कुछ अन्य राज्य पर्यटकों को साहस पर्यटन के नए रूपों की ओर मोड़ कर, उन्हें दूर दराज के ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी-पठारी क्षेत्रों में ले जा रहे हैं; इससे दोहरा लाभ हो रहा है क्योंकि इनमें से अनेक क्षेत्रों में न तो मोटर मार्ग हैं और न ही होटल परिसर।

हमने सोच समझ कर आँध्रप्रदेश को आदर्श विशिष्ट अध्ययन के लिए चुना है। इस अध्ययन से इन कार्य योजनाओं के विनियोग के विषय में कुछ प्रारंभिक जानकारियां मिल सकेंगी।

अध्ययन के लिए आँध्र प्रदेश के चयन का पहला आधार है कि यह राज्य प्राचीन और अर्वाचीन, उत्तरी तथा दक्षिणी बहुभाषी और बहु-जातीय संस्कृतियों के समरूप मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। यह राज्य यात्रा-पर्यटन के संवर्धन के लिए अपने अवस्थिति संबंधी तथा ऐतिहासिक लाभों के विपणन से धन कमा सकता है। इस राज्य का इतिहास द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रारंभ होता है, जब यहां सर्वप्रथम स्वतन्त्र आँध्र साम्राज्य की स्थापना हुई थी। भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व मुगल और आसफजही राजवशों ने यहां अपने चिन्ह छोड़े हैं। इसकी राजधान हैदराबाद अपने में 400 वर्षों का इतिहास संजोए हुए है। निकट ही इस का जुडवाँ नया नगर सिकन्दराबाद है। इनसे पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली की यादें ताजा हो जाती हैं। दोनों दिल्लियों की तरह यहां हिन्दू-मुस्लिम मिश्र संस्कृति का प्रभाव आज भी विद्यमान है। तेलगू इस राज्य की भाषा हैं। लेकिन तेलंगाना में, विशेष रूप से हैदराबाद के आसपास उर्दू भी खूब बोली या समझी जाती है। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय प्रायद्वीप के हृदय स्थल में उत्तर भारत का एक छोटा सांस्कृतिक उद्यान शोभायमान है। यहां शताब्दियों पुराने जैन और बौद्ध स्मारकों के अलावा आदि मानव की गुफाएँ भी हैं। ये सभी राज्य के आन्तरिक क्षेत्र में यत्र-तत्र सर्वत्र विखरे हुए हैं। यहाँ 17वीं शताब्दी की सम्पन्न बस्तियों के अवशेष हैं। विशाखा पत्तनम के प्राकृतिक पोताश्रय में स्वतन्त्र भारत का पहला पोत निर्माण का कारखाना और कृष्णा नदी पर एक प्रमुख बहु-उद्देशीय परियोजना भी है। इस परियोजना का नाम लेते ही बौद्ध मनीषी नागार्जुन की याद आ जाती है। निजाम सागर तथा दोनों जुड़वों शहरों के बीच स्थित हुसैन सागर नामक झील ने इस प्रदेश के सौन्दर्य तथा विरासत को और अधिक आकर्षक बना दिया है। चार मीनार, अनेक भव्य मस्जिदें तथा संग्रहालय इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं। आकर्षणों की विविधता के कारण यहां बहु-रूपी पर्यटन को विकसित करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। यही नहीं यहां के पर्यटन स्थलों पर आसानी से पहुँचा जा सकता है, क्योंकि अवस्थिति की दृष्टि से हैदराबाद राज्य के केन्द्र में बसा है। एक दूसरे से अधिक दूर नहीं है। पठारी धरातल तथा तटीय मैदान परिवहन के सभी प्रकार के मार्गों के अनुकूल हैं। राज्य

की राजधानी में चारों दिशाओं में स्थित भारत के महानगरों से रेल मार्ग, सड़कें और वायुमार्ग आकर मिलते हैं।

गाँधी जी आज के पर्यटक के समान तो नहीं थे। लेकिन किन्हीं विशेष कारणों से उन्होंने 'यंग इण्डिया' पत्र के 16 जून सन् 1927 के अंक में लिखा था 'मैं अगले वर्ष कुछ दिनों के लिए नहीं अपितु एक या दो महीनों के लिए आँध्र प्रदेश में रहना चाहूंगा तथा यहां रहकर आराम के साथ-साथ काम भी करूंगा। 'यंग इण्डिया' एक पत्र था जिसका संपादन उन दिनों गांधी जी स्वयं किया करते थे। काम के साथ आराम वर्तमान पर्यटन की स्वीकृत अवस्था है। आँध्र प्रदेश के पर्यटक स्थलों के आकर्षण से गाँधी जी भी अभिभूत थे। राज्य ने पर्यटन के संवर्धन के लिए उन्हीं ठोस कार्ययोजनाओं को लागू किया है, जिनका वर्णन हम इस पाठ के पूर्वार्ध में कर चुके हैं।

पर्यटन के विकास के लिए अपने आकर्षणों के महत्व को राज्य ने काफी देर बाद समझा। राज्य में काफी समय बीतने पर सन् 1974 में जाकर कहीं यात्रा और पर्यटन विभाग की स्थापना की गई। यात्रा-पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने में इसे 11 साल और लगे। मई सन् 1994 में पहला नीतिगत निर्णय तब लिया गया जब कुछ स्थानों के पर्यटकों को विशिष्ट रूचि का घोषित किया गया। पयटन क्षेत्र में निजी पूंजी निवेश को आकर्षित करने में भी कुछ प्रगति हुई है। पर्यटन के विकास के लिए बुनियादी ढ़ाँचे की सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक 15 वर्षीय सापेक्ष महत्त्ववाली योजना को अन्तिम रूप दिया गया है।

पर्यटन को विकसित करने के लिए क्रमिक कदम उठाए गये हैं। इसे प्रादेशिक और क्षेत्रीय स्वरूप प्रदान करके एक सुदृढ़ संगठन बनाया गया है। अपने पर्यटन स्थलों को स्थानिक दृष्टि से वर्गीकृत करने के लिए राज्य को निम्न लिखित चार मंडलों में विभाजित किया गया है:-

(i) प्रवेशद्वार मंडल या दक्षिणी तिरूपति मंडल
(ii) भीतरी प्रदेश में मध्य विरासत मंडल या हैदराबाद मंडल।
(iii) धूप वाला उत्तरी मंडल या विशाखापत्तनम मंडल
(iv) साहसिक मंडल

इन मंडलों में स्थित पर्यटन स्थलों के पुनः तीन वर्ग बनाए गए हैं। इन वर्गों के नाम हैं, विरासत केन्द्र, विश्राम स्थल तथा पूजा स्थल। पहले वर्गीकरण का आधार भौगोलिक है तथा दूसरे का आधार कार्यात्मक है। दोनो ही योजनाओं के द्वारा चारों मंडलों में पर्यटकों के आवागमन को नियन्त्रित करने के उपाय किए जाएँगें तथा प्रत्येक मंडल के स्थलों के प्रकारों का पता लगाया जाएगा। इस बात की पूरी संभावना है; क्योंकि राज्य सरकार पर्यटन के पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमों के गठन पर विचार कर रही है। पूर्व नियोजित पर्यटक परिपथों पर स्थित दर्शनीय स्थलों के लिए परिवहन और आवास की सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी।

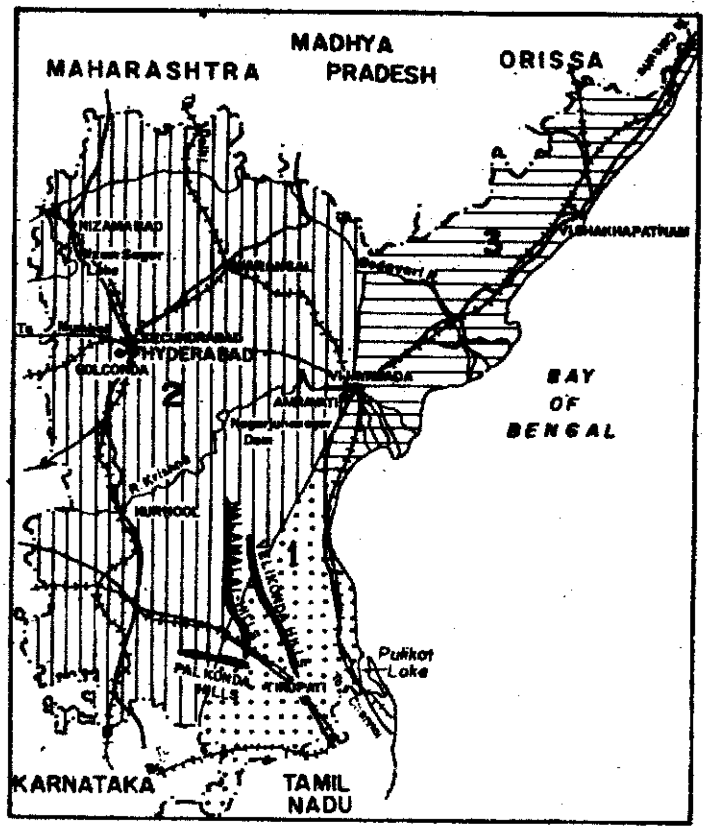

1. Gateway Zone or the Southern Tirupati Zone.
2. Central Heritage Zone in the Interior or the Hyderabad-Zone
3. Sunny Northern Zone or the Vishakhapatnam Zone

चित्र 31.1 आँध्र प्रदेश के पर्यटन मंडल

इनके अलावा राज्य के विभिन्न भागों में तथा अलग-अलग अवसरों पर नौ प्रकार के उत्सवों के मनाने की कार्ययोजना बनाई गई है। चारों मंडलों में पर्यटकों की रूचि वाले स्थानों पर उत्सवों के आयोजन से दर्शनार्थियों की भारी भीड़ आकर्षित होने की संभावना है। निश्चय ही उत्सवों में पर्याप्त विविधता होगा। इनमें तीर्थ यात्रियों, विश्रान्ति प्रिय लोगों और मनोरंजन तथा साहस पूर्ण क्रीडाओं के प्रेमियों के लिए विविध प्रकार के उत्सव आयोजित किए जाएँगे। इसमें बदलती ऋतुओं के अनुकूल आमोद प्रमोद वाले उत्सव भी होंगे। पर्यटन केन्द्रों पर अत्यधिक भीड़ पर नियंत्रण करके, बड़े पैमाने के जन पर्यटन से होने वाले हानिकारक प्रभावों को दूर करने की योजना भी है। राज्य सरकार पर्यटन के विकास में पूरी-पूरी सावधानी बरत रही है, तभी तो पर्यटन के क्रमिक विकास को ही चुना गया है। इसीलिए पर्यटन के विशिष्ट क्षेत्रों को चुनकर वहां पर्यटन के अनेक क्रियाकलापों वाले स्वरूप के विकास को प्राथमिकता दी गई है। स्वदेशी और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए तीर्थ पर्यटन के विकास पर विशेष बल दिया गया है।

(i) **तिरुपति मंडल** को प्रवेश द्वार मंडल नाम सर्वथा उचित है; क्योंकि सबसे अधिक संख्या में तीर्थ यात्री और पर्यटक इसी सबसे धनी हिन्दू मन्दिर में आते हैं। इस मन्दिर में भगवान वेंकटेश्वर की प्राकृतिक रूप से निर्मित मूर्ति है। तेरह सौ वर्षों से अधिक समय से औसतन 25,000 व्यक्ति प्रतिदिन यहां दर्शनों के लिए आते हैं। उत्तर में वैष्णोदेवी तथा दक्षिण में तिरूपति के मन्दिर में भारत के कोने-कोने से बारहों महीने तीर्थ यात्री आते रहते हैं। सन् 1996 में भारत के 23 लाख स्वदेशी पर्यटकों मे से 15 लाख तीर्थ यात्री थे। इस प्रवृति को देखते हुए स्वदेशी पर्यटकों के लिए तिरूपति को प्रवेश द्वार मंडल मानना सर्वथा उचित है। आँध्र प्रदेश के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित तीरुमाला नाम की 860 मीटर ऊँची पहाड़ियों पर तिरुपति मन्दिर बना है। यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से भी आकर्षक है। प्राचीनता, मूल्यवान भित्तिचित्र, राजा-महाराजाओं द्वारा दान में दिए गए सोने चांदी और हीरे-जवाहरातों की अपार संपदा तथा मन्य मूर्तियाँ मन्दिर के विशिष्ट आकर्षण हैं। इस पहाड़ी की तलहटी में तिरूपति नगर बसा है। यहां से मन्दिर जाने के लिए 11 कि. मी. का चढ़ाई वाला मार्ग है। इस मार्ग के आस पास जल प्रपात, जलाशय, वन और 1265 मी. ऊंचाई पर बना एक ग्रीष्म ऋतु का पर्यटक स्थल है।

(ii) **मध्य अथवा आन्तरिक मंडल** गोदावरी और कृष्णा नदियों के ऊपरी मार्गों के बीच, राज्य के उत्तरी मार्गों के मध्य भाग में फैला है। इस मंडल के पूर्वी भाग में विजयवाड़ा के निकट कृष्णा नदी के तट पर अमरावती में तथा केन्द्र में नागार्जुनकोंडा में अनेक बौद्ध स्मारक, मन्दिर तथा स्तूपों और विहारों के भग्नावशेष विद्यमान हैं। इनके पश्चिम में मूसी नदी के किनारे पर हैदराबाद नगर है। इसके निकट ही गोलकुण्डा का किला है। इसे विरासत मंडल का नाम ठीक ही दिया गया है, क्योंकि यहाँ पुरातात्विक महत्व के बौद्ध स्मारक हैं, इनमें से कुछ स्थान आज भी भक्तों द्वारा पूजे जाते हैं। यहाँ मस्जिदें हैं, प्रसिद्ध मक्का मस्जिद है, प्राचीन हिन्दू मन्दिर हैं, निजाम सागर और हुसैन सागर जैसे जलाशय हैं तथा मेहरब, राजमहल और किले भी हैं। हैदराबाद नगर का सर्वोकृष्ट आकर्षण है, विशाल सालार-जंग संग्रहालय। इसमें एक ही कला प्रेमी व्यक्ति की वस्तुओं का संग्रह है। हैदराबाद अपनी हस्तकलाओं के लिए विशेष रूप विख्यात है। मोतियों का काम तथा अन्य हस्त शिल्प कुछ प्रसिद्ध उदाहरण हैं। दक्षिण पश्चिम में धर्मावरम नाम का नगर है। धर्मावरम की साड़ियाँ पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं।

(iii) **उत्तरी विशाखापत्तनम मंडल** का महत्व बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित प्राकृतिक बन्दरगाह विशाखापत्तनम के कारण बढ़ गया है। इसका विस्तार दक्षिण में गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टा प्रदेश तक है। यह सचमुच दक्षिण भारत का सदा हरित धान्यागार है। गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टाओं के मध्य ताजे जल की कोल्लेरू झील है। कहा जाता है कि यह अपनी तरह की एशिया में सबसे बड़ी झीलों में से एक है। यदि इसमें निरंतर भरती जा रही गाद मिट्टी पर नियंत्रण किया सके तो यह सामान्य पर्यटकों की भीड़ को आकर्षित कर सकती है। मछलियों को पकड़ने में रूचि रखने वाले पर्यटकों का भी यह आकर्षण केन्द्र बन सकती है। वर्तमान स्थिति में भी एक आकर्षक पक्षी विहार के रूप में इसका महत्व कुछ कम नहीं है। यह झील समुद्र से 32 की.मी. की दूरी पर है। गोआ के पुलिनों के समान ही सुन्दर यहां दो पुलिन हैं। समुद्र के तट पर यह खिली धूपवालों बलुई अनुकूल है। इसे केन्द्र बनाकर आसपास की पहाड़ियों पर बने प्राचीन मन्दिरों के दर्शनों के लिए जाना आसान है। निकट ही अराकू घाटी में प्रागैतिहासिक गुफाएँ हैं, जिनमें आज भी अनेक जनजातियाँ रहती हैं। अराकू घाटी के

जन-जातीय लोक नृत्यों के अलावा, निष्पादन कलाओं के क्षेत्र में आँध्र प्रदेश के कुचिपुड़ि शास्त्रीय नृत्य विश्व विख्यात हैं। कुचिपुड़ि नगर विजयवाड़ा से, मोटर वाहन द्वारा दो घंटे की दूरी पर है। इस नृत्य के प्रवर्तक योगी ऋषि इसी नगर में रहते थे। अराकू घाटी की चूने के पत्थर की शैलों की कुछ सुन्दर गुफाएँ हैं।

बिजली के प्रकाश में जगमगाती इन गुफाओं को भीतर तक बड़ी अच्छी तरह देखा जा सकता है। इनका सबसे बड़ा आकर्षण यह कि यहां तक सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

(iv) **साहसिक मंडल** का विस्तार पूरे राज्य में है। शैल आरोहण के लिये पूर्वी घाट की पहिड़ियां हैं, समुद्र तट के पास जलतरण की सुविधाएँ, निजाम सागर और हुसैन सागर में नौका विहार का आनन्द लिया जा सकता है, तथा राज्य के मध्य से होकर बहने वाली गोदावरी और कृष्णा नदियों में साहसी नौकायन को आनन्द ले सकते हैं। ये सभी आकर्षण फैले तो सर्वत्र हैं, लेकिन पारखी नजर के बिना दिखाई नहीं पड़ता इस बात को ध्यान में रखकर ही पर्यटकों का वितरण इस तरह किया जाना चाहिए कि राज्य के सभी भागों का पर्यटन से बराबर के लाभ मिल सके।

इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने जापान, थाईलैंड, सिंगापुर इण्डोनेशिया जैसे बौद्ध देशों तथा संसार के अन्य भागों से पर्यटकों के आकर्षित करने के लिए एक बड़ी प्रचार अभियान प्रारम्भ किया है। नागार्जुन सागर बाँध के आधुनिक मन्दिर के निकट बौद्ध कला और मूर्तिशिल्प का एक संग्रहालय तथा शोध संस्थान बनाया गया हे। नव-विवाहित बौद्ध युवक-युवतियों की एक परंपरा है कि वे विवाह के तुरंत बाद अपना कुछ समय बौद्ध धर्म स्थानों में व्यतीत करें। पर्यटन के लिए इन रीति-रिवाजों से बहुत लाभ उठाया जा सकता है, क्योंकि इस तीर्थ स्थान के निकट तो मानव निर्मित मनोहारी झील का आकर्षण भी है।

इस प्रकार के स्थलों का इन दम्पत्तियों के लिए दोहरा आकर्षण होता है। अपने पड़ोसी देशों से आने वाले इन पर्यटक-तीर्थ यात्रियों पर निर्भर करना अधिक अच्छी कार्य-योजना है। यूरोपीय पर्यटको की तुलना में जापानी पर्यटकों से अधिक आमदनी होती है। 15 दिन ठहरने वाला जापानी 500/-रु प्रतिदिन व्यय करता है। इसके विपरीत 25 दिन ठहरने वाला यूरोप वासी 360/-रु प्रतिदिन खर्च करता है। दूसरे शब्दों में, पर्यटन को भक्ति के साथ मिला देने से ठरहने के पहले 15 दिनों में जापानी-यूरोप वासी से अधिक का भुगतान करता है।

यह ठीक है कि कुल मिला कर यूरोपीय पर्यटक जापानी की अपेक्षा अधिक भुगतान करता है, लेकिन ऐसा वह 25 दिनों की अवधि में करता है। यद्यपि जापान और दक्षिण पूर्व एशियाई प्रदेश से कुल 6.2% पर्यटक भारत आ रहे हैं लेकिन उनके द्वारा बौद्ध स्मारकों के पुन-र्निमाण में पूंजी निवेश की संभावना है, जैसा कि वे अजन्ता-एलोरा की गुफाओं में कर रहे हैं। इस संबंध में जापानी अग्रणी निवेशक हैं। वे भी वैसा ही करेंगे जैसा कि थाइलैंडवासी बिहार के बौद्ध गया के मन्दिर के रख-रखाव के लिए कर

रहे हैं। इस प्रकार यह एक चयनात्मक कार्य प्रणाली है, जिसका प्रयोग अधिक लाभकारी विशिष्ट प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए किया जा रहा है।

तिरुपति के मन्दिर में पूरे वर्ष भारी संख्या में स्वदेशी पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है। विगत तीन वर्षों में प्रतिवर्ष औसतन 50,000 विदेशी पर्यटक आँध्र प्रदेश में आए। इसके विपरीत इसी अवधि में स्वदेशी पर्यटकों या तीर्थ यात्रियों की प्रतिवर्ष औसत संख्या 90 लाख (उत्सवों के दिनों की संख्या के अतिरिक्त) मन्दिर में पूजा करने और दर्शन करने के लिए आए।

विशाखापत्तनम और तिरूपति में राज्य सरकार सस्ती दरों वाले यात्री निवासों का निर्माण कर रही है। तिरुमाला न्यास द्वारा संचालित अनेक अथिगृहों की श्रृंखला में यह एक अतिरिक्त कड़ी है। इसके अतिरिक्त सन 1994-95 में बौद्ध पूजा स्थलों का विकास करने के लिए राज्य सरकार ने 10 लाख रुपयों की सांकेतिक धन राशि का प्रावधान किया है।

सन 1991-92 और 1993-94 के वर्षों में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित धन राशि में चौगुनी वृद्धि से यात्रा संवर्धन की कार्य योजनाओं को आगे बढ़ाया गया था। लेकिन 1994-95 में निर्धारित धनराशि को घटाकर एक तिहाई कर दिया गया तथा 1995-96 में इसे और कम कर दिया गया। बजट निधारिण में घटोतरी का कारण स्पष्ट नहीं है। राज्य सरकार प्रतिवर्ष अर्जित 6 करोड़ रुपयों की विदेशी मुद्रा का एक भाग पर्यटन विकास के लिए अलग रख सकती थी। शायद यह धन राशि अक्सर आने वाले चक्रवातीय तूफानों और बाढ़ों द्वारा हुए विध्वंस की भरपाई करने के लिए खर्च की, शराब बन्दी और सस्ती दर पर चावल बेचने से हुई हानि का पूरा करने के लिए इसका उपयोग कर लिया गया। वास्तव में प्रादेशिक विकास की आवश्यकताओं से अलग हटकर पर्यटन संवर्धन की किसी भी कार्य योजना को लागू नहीं किया जा सकता। अर्थ व्यवस्था के संबंधित क्षेत्रों के समग्र विकास की सीमाओं का उल्लंघन भी नहीं किया जा सकता।

- नियोजित आधार पर पर्यटन के विकास की कार्य-योजनाओं के विनियोग के अध्ययन के लिए आँध्र प्रदेश का चयन सर्वोत्तम है। यहां विविध प्रकार के क्षेत्र हैं, कई युगों का इतिहास है तथा कई भाषाएँ हैं। उच्चावच के अनुकूल लक्षणों और अवस्थिति संबंधी लाभों के कारण यहां पहुंचना आसान है।
- राज्य को चार भौगोलिक मंडलों में विभाजित किया गया है तथा प्रदेश के विविध प्रकार के पर्यटक-आकर्षणों से लाभ उठाने के लिए प्रत्येक मंडल में स्थित पर्यटक स्थलों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।
- राज्य सरकार ने स्वदेशी और विदेशी तीर्थ यात्रियों के आवागमन को ध्यान में रखकर पर्यटन के क्षेत्र चयनात्मक और बहु-रूपीय क्रमिक विकास को अपनाया है।

पाठगत प्रश्न 31.2

1. निम्न लिखित में से प्रत्येक की एक वाक्य में परिभाषा दीजिए।
   (i) पर्यटन बाजार (ii) चिरकालिक पर्यटन (iii) सांस्कृतिक अंतःक्षेत्र
2. निम्नलिखित में प्रत्येक के लिए समानार्थक उपयुक्त पारिभाषिक शब्द बताइये:
   (i) व्यापारिक संगठन द्वारा आयोजित यात्राएँ।
   (ii) पर्यटकों की रूचि के अनुसार विविध प्रकार के पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों की भारी संख्या को इधर से उधर भेजने की कार्य योजना।
   (iii) यात्रा, पथ प्रदर्शक, यात्रा एजेंट तथा होटल के प्रबंधक।
   (iv) किसी क्षेत्र के विशिष्ट आकर्षणों के लिए नियोजित पर्यटन।
   (v) यात्रा एजेंसी द्वारा आयोजित पर्यटकों की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला पर्यटन कार्यक्रम।
   (vi) आतिथ्य क्षेत्र की पारिवारिक घरों में प्रदत्त आवासीय सुविधा।
3. निम्न लिखित में से प्रत्येक के साथ जुड़े हुए पर्यटन के प्रमुख प्रकार और अन्य आकर्षणों का वर्णन कीजिए:
   (i) तिरुपति (ii) विशाखापत्तनम् (iii) हैदराबाद
4. आँध्र प्रदेश के निम्नलिखित क्षेत्रों में पर्यटकों के लिए कौन से आकर्षण है।
   (i) मध्य मंडल में जापानियों के लिए (ii) अराकू घाटी (iii) कुचिपुड़ि
   (iv) धर्मावरम
5. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए समाजिक जागरूकता के तीन लाभ कौन से हैं?
6. आँध्रप्रदेश में सन 1974,1975 और 1994 में पर्यटन के विकास के लिए स्वीकृत कार्य योजनाओं के नाम बताइये।

आपने क्या सीखा

आपने पर्यटक क्षेत्र के पर्यावरण, स्थानीय अर्थव्यवस्था और स्थानीय लोगों के सामाजिक जीवन पर पर्यटकों की अनियंत्रित भीड़ के दुष्प्रभावों के विषय में जाना। पर्यटकों और स्थानीय लोगों के मिलन से अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। आधुनिक पर्यटन की परिवर्तित प्रकृति के कारण अनेक नए विकास हुए हैं। पर्यटन के विकास की सुविचारित योजना को कई चरणों में पूरा करने की आवश्यकता होती है। ये चरण है– क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण तथा स्वस्थ और चिरकालिक पर्यटन के विकास के उपाय। धीमे और क्षेत्र चयनात्मक पर्यटन के नीति का पालन करने से क्षेत्र की सभी संभावनाओं का पूरा-पूरा उपयोग करके भी पर्यटन के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है।

पर्यटन के विकास के लिए स्थानीय क्षेत्र के आकर्षणों के विषय में समाज की जानकारी, बुनियादी ढाँचे की मजबूती तथा अपने भूदृश्यों और विरासत के विपणन के महत्व को कम करके नहीं आँका जाना चाहिए।

पर्यटन के विकास के लिए कार्य योजनाओं को लागू करने का उपयुक्त उदाहरण आँध्र प्रदेश का है। इसी लिए इसे अध्ययन विशिष्ट के लिए चुना गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न लिखित कथनों के लिए कारण बताइये-
   (i) पर्यटन ऐसा उद्योग है, जिसमें प्रदुषक छोड़ने वाली चिमनियाँ नहीं होती, फिर भी यह प्रदूषकों के दुष्प्रभावों से ग्रस्त हैं।
   (ii) अत्यधिक संख्या में पर्यटकों के आगमन से पर्यटक स्थलों में चीजों की कमी हो जाती है और उनकी कीमतें बढ़ जाती हैं।
   (iii) स्थानीय लोगों के सहयोग तथा उनकी आवश्यकताओं को पूरा किये बिना ताजमहल को विकृति से नहीं बचाया जा सकता है।
   (iv) पुलिन पर्यटन ने स्थानीय युवकों को अपनी संस्कृति से दूर कर दिया है।
   (v) आँध्र प्रदेश में आने वाले पर्यटकों के लिए तिरुपति प्रवेश द्वार है।
   (vi) आँध्र प्रदेश ने पर्यटन का जो माडल अपनाया है, वह क्षेत्र चयनातमक तथा जन विशिष्ट है
2. प्राचीन और आधुनिक पर्यटन के संगठन में हुए परिवर्तन की प्रकृति को स्पष्ट करिए।
3. पूर्व निर्धारित पर्यटन कार्यक्रमों के गुण-दोषों का वर्णन किजिए।
4. पर्यटकों के लिए आँध्र प्रदेश और तिरुमाला पहाड़ियों के कौन-कौन से आकर्षण हैं?
5. किसी क्षेत्र में पयर्टन को विकसित करने के लिए किए जान वाले सर्वेक्षण के लिए प्रश्नों या आँकड़ों के शीर्षकों की सूची बनाइये।
6. यात्रा और पर्यटन के सपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने वाली तीन बिन्दु योजना का वर्णन कीजिए।
7. आँध्र प्रदेश द्वारा पर्यटन के विकास के लिए स्वीकृत प्रादेशिक पद्धति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
8. पर्यटकों और स्थानीय लोगों के व्यवहार, रूचि और उपभोग के स्तर में जो अन्तर है, उनकी सूची निम्न लिखित स्तंभों मे बनाइये। दोनों स्तंभों में दिए गए उदाहरणों से मदद लीजिए। आप अपने शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

आगन्तुक पर्यटक	स्थानीय लोग
1) होटलों और मनोरंजन पर शाही खर्च	क) पर्यटकों की जीवन शैली का अनुकरण
2)	ख)
3)	ग)
4)	घ)

अपने उत्तरों को जाँचिए-

31.1

1. 1) नम भूमियाँ 2) ताज समलम्ब 3) घट जाती है
2. (i) विदेशी पर्यटक और उनकी स्त्रियाँ पुलिनों पर खुले रूप में घूम सकेंगी और लेट सकेंगी। इस प्रकार फैशन का उन्माद हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाता। (ii) जहां शालीनता होनी चाहिए वहां शालीनता की कमी। (iii) केवल सुख भोग के लिए धन के व्यय का स्थानीय युवकों द्वारा अन्धानुकरण इस प्रकार अन्ततोगत्वा वे अपनी संस्कृति से कट जाते हैं।
3. (i) अनुमति लिए बिना ही स्थानीय लोगों के घरों में प्रवेश, स्त्रियों के फोटो खींचना, तथा मर्यादाओं का उल्लंघन करके मन्दिरों में प्रवेश, क्योंकि वे मर्यादाओं से अपरिचित हैं।

   (ii) पर्यटक अतिथेयों की वस्तुओं और सेवाओं को खरीद लेते हैं। अतिथेय इन्हें केवल व्यापारिक आधार पर प्रदान करता है। अतिथि-सत्कार पारंपरिक नहीं होता, उसे भी बिक्री की वस्तु के समान ही बेचा जाता है।

   (iii) इस हितकर आपसी भेंट में एक दूसरे की संस्कृति से संबंधित विचारों और जानकारी का आदान प्रदान होता है।
4. (i) स्थानीय लोगों के साथ बिना किसी टकराव के विदेशियों को पूरी स्वतन्त्रता देना। पर्यटकों का नए उपनिवेश वादियों की तरह भारत में पुन प्रवेश करके ठहरना।

   (ii) पर्यटकों की भीड़ तथा स्थानीय लोगों में वहाँ की सुविधाएँ और आवश्यक वस्तुएँ बँट जाती हैं। उनकी सीमित आपूर्ति, जो सामान्यतः मांग से कम रहती है, मांग में हुई भारी वृद्धि को पूरा नहीं कर पाती। कीमतों में हुई वृद्धि से पर्यटकों पर तो थोड़ा-बहुत प्रभाव पड़ता है, लेकिन स्थानीय लोगों की महँगाई से कमर ही टूट जाती है।

   (iii) मन्दिरों के निकट बनी उड़ान पट्टी पर विमानों के उतरते और उड़ान भरते समय होने वाले कंपन।

   (iv) इससे गुफाओं के अन्दर वायु का निर्बाध संचरण रूक जाता है, परिणाम स्वरूप अत्यधिक आर्दता पैदा हो जाती है।

   (v) एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा में आकर्षक पर्यटकों को आकृष्ट कर खूब लाभ कमा सकें।

   (vi) पैट्रोलियम उत्पादों से के उपभोग से पैदा होनें वाले प्रदूषक निरंतर वायु में प्रवेश करते रहते हैं इस से प्राचीन भवनों के वाहय भागों की चमक कम होती जाती है।
5. 1) ग के साथ 2) ङ के साथ 3) ख के साथ 4) क के साथ
   5) घ के साथ।

पाठगत प्रश्न 31.2

1. (i) पर्यटक बाजार, वह बाजारी संबंध है, जिसका विकास तब होता है, जब अनेक पर्यटक हमारी सेवाओं की कीमत चुकाने के लिए तैयार होते हैं।
   (ii) चिरकालिक पर्यटन, वह पर्यटन है, जिसका उद्देश्य अव्यस्त अवधि को घटा कर जीवकोपार्जन के वैकल्पिक अवस्‌ जुटाना है या उपयुक्त लघु उद्योगों में रोजगार के अवसर प्रदान करना है।
   (iii) सांस्कृतिक अन्तक्ष : विशिष्ट संस्कृति वाला वह क्षेत्र है, जो चारों ओर से एक विशाल भिन्न संस्कृति वाले क्षे: के बीच में स्थित होता है।
2. 1) अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन 2) संभालने की क्षमता 3) व्यावसायिक मध्यस्थ
   4) क्षेत्र चयनात्मक पर्यटन 5) पर्यटन के पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम
   6) सशुल्क अतिथि।
3. (i) तिरुपति तीर्थ यात्रा पर्यटन, यहाँ 1300 वर्ष पुराना प्राकृतिक रूप में बनी दो मीटर ऊची मूर्ति हैं, जिसे हिन्दू तीर्थ यात्री बहुत पवित्र मानते हैं। यह तिरुमाला की पहाड़ियों के अनेक प्राकृतिक आकर्षणों के लिए प्रवेश द्वार है।
   (ii) विशाखापत्तनम् : समुद्री दृश्य पर्यटन, निकटस्थ गुफाओं और पहाड़ियों पर बने प्राचीन मंदिरों के दर्शनों के लिये जाने का केन्द्र बिन्दु तथा इसके प्राकृतिक बन्दरगाह में जहाज बनाने का कारखाना।
   (iii) हैदराबाद: सांस्कृतिक पर्यटन, एक मध्यकालीन पुराना नगर इसके निकट गोलकुंडा का किला है, अनेक मस्जिदें, प्राचीन स्मारक तथा अनेक हस्त शिल्पों के लिए इसकी ख्याति। यहां प्रसिद्ध सालार जंग संग्रहालय तथा हुसैन सागर झील है।
4. (i) बौद्ध स्मारक, संग्राहलय, शोध संस्थान, मूर्तियां तथा नागर्जुन सागर के प्राकृतिक भूदृश्य विशेष रूप से जापान जैसे बौद्ध देश से नव-विवाहित दम्पतियों को आकृष्ट करते हैं। वे भक्तों के रूप में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए आते हैं तथा यहां के आस-पास ठहर कर आनन्द विभोर हो जाते हैं।
   (ii) जनजातियों के अनेक लोकनृत्यों तथा विद्युत प्रकाशित गुफाओं के लिए विख्यात।
   (iii) कुचिपुड़ि शास्त्रीय नृत्य के प्रर्वतक योगी ऋषि की आवास भूमि होने के कारण कला-प्रेमियों के आकर्षण का साधन है।
   (iv) हैदराबाद के दक्षिण पश्चिमी भाग, यह संपूर्ण भारत वर्ष में अपनी विशिष्ट साड़ियों के लिए विख्यात है।
5. (i) स्थानीय लोगों में अपने भूदृश्यों के प्रति गर्व की भावना (ii) इसकी सांस्कृतिक विरासत (iii) हस्तशिल्प
6. (i) 1974 में यात्रा और पर्यटन के पृथक विभाग की स्थापना। (ii) 1985 में पर्यटन को उद्योग घोषित किया गया।
   (iii) पर्यटन के लिए विशेष स्थलों के विकास के लिए एक 15 वर्षीय योजना का निर्माण।

पाठान्त प्रश्न के उत्तरों के संकेत

1. (i) 31.3 का अन्तिम अनुच्छेद देखिए।
   (ii) 31.4 का दूसरा अनुच्छेद देखिए।
   (iii) 31.3 का अन्तिम अनुच्छेद देखिए।
   (iv) 31.6 का प्रथम अनुच्छेद देखिए।
   (v) 31.6 के विवरण को पढ़िए।
   (vi) 31.7 के पांचवें अनुच्छेद को देखिए।
2. 31.6 के पहले अनुच्छेद को देखिए।
3. 31.6 के दूसरे अनुच्छेद को देखिए।
4. 31.7 के एक से लेकर तीसरे अनुच्छेद तक का अध्ययन कीजिए।
5. 31.6 के तीसरे अनुच्छेद को देखिए।
6. 31.6 के अन्तिम अनुच्छेद को देखिए।
7. 31.7 के चौथे अनुच्छेद को देखिए।
8. (i) पहले ही उत्तर दिया जा चुका है।
   (ii) वस्तुओं और सेवाओं का क्रेता (ख) व्यापारिक आधार पर पर्यटकों का स्वागत और उनसे व्यवहार।
   (iii) स्थानीय लोगों को जिज्ञासा की वस्तु समझाना (ग) पर्यटकों में शालीनता की कमी के प्रति संदेहशील।
   (iv) आमोद-प्रमोद प्रेमियों के रूप में ठहरना (घ) स्थानीय युवक अपनी संस्कृति से कट जाते हैं।